

Review Article

भारतीय शुद्धि सभा का भारतीय समाज पर प्रभाव: एक विवेचनात्मक अध्ययन

अनीता गोस्वामी¹, सुमित कुमार²

¹ विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, सरधना, उत्तर प्रदेश, भारत

² शोध छात्र इतिहास विभाग, शहीद मंगल पांडेय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: <https://doi.org/10.24321/2456.0510.202622>

INFO

Corresponding Author:

सुमित कुमार, इतिहास विभाग, शहीद मंगल पांडेय राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत |

E-mail Id:

sumit9639130@gmail.com

Orcid Id:

<https://orcid.org/0009-0000-7560-3891>

How to cite this article:

अनीता गोस्वामी, सुमित कुमार, भारतीय शुद्धि सभा का भारतीय समाज पर प्रभाव: एक विवेचनात्मक अध्ययन, Anu: a, Mul, Int, Jour, 2026; 11(1&2): 68-73.

Date of Submission: 2026-04-22

Date of Acceptance: 2026-6-02

ABSTRACT

भारत के इतिहास में उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के मध्य का समय सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिवर्तन के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण रहा है। उस कालखण्ड में भारतीय समाज अनेक सामाजिक कुप्रथाओं, धार्मिक परम्पराओं, जातिगत असमानताओं और सामाजिक भेदभाव से प्रभावित रहा है। इसी कारण इस समय में अनेक धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन भारतीय इतिहास में देखने को मिलते हैं। इन आन्दोलनों का प्रमुख उद्देश्य भारतीय समाज को इन सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक कट्टरता और जातीय भेदभाव के प्रति जागरूक करना था जिससे भारत के लोगों के जीवन में सुधार लाया जा सके। शुद्धि आन्दोलन भी इसी प्रकार के आन्दोलनों में से एक महत्वपूर्ण आन्दोलन था। भारतीय शुद्धि सभा द्वारा संचालित शुद्धि आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य उन लोगों को दोबारा हिन्दू धर्म में लाना था, जिन्होंने पहले किसी कारण से कोई अन्य धर्म अपना लिया था, जिसमें भारतीय शुद्धि सभा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालाँकि शुद्धि आन्दोलन मात्र धार्मिक आन्दोलन तक सीमित नहीं रहा बल्कि इसने सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक जागृति, शिक्षा, जातिगत भेदभाव में सुधार जैसे प्रमुख विषयों को भी महत्व दिया। इसी कारण से शुद्धि आन्दोलन के कुछ कार्यों को लेकर उस समय के समाज में मतभेद दिखाई पड़ते हैं जबकि भारतीय शुद्धि सभा द्वारा किये गये कार्य उस समय की धार्मिक एवं सामाजिक परिस्थिति का परिणाम थे जिसने समाज के हर एक वर्ग को अपने विचारों और कार्यों से प्रभावित किया। भारतीय शुद्धि सभा का अध्ययन बीसवीं शताब्दी में हो रहे सामाजिक एवं धार्मिक परिवर्तनों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: भारतीय शुद्धि सभा, शुद्धि आन्दोलन, धार्मिक सुधार, जातिगत भेदभाव, भारतीय समाज, सामाजिक सुधार, स्वामी श्रद्धानन्द

प्रस्तावना

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही विविधता रही है। विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग, अनेक प्रकार की भाषाएँ, विभिन्न जाति एवं समुदाय के लोग, और भिन्न-भिन्न प्रकार की सांस्कृतिक विविधता भारतीय समाज की विशेषता रही है। समय और परिस्थिति के अनुसार धार्मिक परिवर्तन, सामाजिक गतिशीलता और राजनीतिक परिवर्तनों के कारण समुदायों की संरचना में भी परिवर्तन होते रहे हैं। इसी तरह के परिवर्तनों के कारण 19वीं शताब्दी के मध्य से लेकर बीसवीं शताब्दी के मध्य का समय अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस समय भारतीय समाज ब्रिटिश शासन की राजनीतिक एवं आर्थिक शोषणकारी नीतियों से प्रभावित हो रहा था वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज में सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की धाराएँ बन रही थीं। बाल विवाह, स्त्री शिक्षा का अभाव, जातिगत भेदभाव, अनेक प्रकार के अंधविश्वास आदि कुरीतियों के प्रति भारतीय समाज जागरूक हो रहा था और अनेक चिंतक और विचारक इन समस्याओं को समाप्त करने के प्रयास में लगे हुए थे। इसी काल में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज आदि इनके जैसी अनेक सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संस्थाओं ने अपने-अपने दृष्टिकोण से भारतीय समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास किया। इसी समय स्वामी श्रद्धानन्द ने भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना की जिसने भारतीय समाज को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

शुद्धि शब्द का अर्थ है, पवित्रता। संसार में कोई वस्तु ऐसी नहीं है, जो अन्य वस्तुओं के सम्पर्क में आने पर अशुद्ध न होती हो, किन्तु हर एक वस्तु को शुद्ध करने की एक विधि होती है जैसे अशुद्ध सोने को आग में तपाकर शुद्ध कर लेते हैं, गन्दे बर्तन को मिट्टी से माँजकर साफ कर लेते हैं।¹ लेकिन यहाँ पर शुद्धि आन्दोलन के सन्दर्भ में शुद्धि शब्द का अर्थ शुद्धिकरण से या पुनः अपने धार्मिक समुदाय में प्रवेश से जुड़ा है। मुख्य रूप से शुद्धि की इस अवधारणा को स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज ने विकसित किया है। सबसे पहले शुद्धि के क्षेत्र में कार्य स्वामी दयानन्द ने अपनी पंजाब यात्रा के दौरान किया। इस समय हिन्दुओं को ईसाई प्रचारक अपने धर्म में धर्म परिवर्तन करा रहे थे। उन प्रचारकों को अमेरिका, इंग्लैंड और अन्य पाश्चात्य देशों से आर्थिक सहायता मिल रही थी और इसी कारण से पाश्चात्य प्रचारक हिन्दू धर्म के लिए खतरा बन गये थे। स्वामी दयानन्द ने सबसे पहले पंजाब में हिन्दू धर्म पर इस खतरे का अनुभव किया इसलिए उन्होंने शुद्धि का प्रतिपादन किया।²

23 फरवरी 1923 को आगरा में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द भी उपस्थित हुए। इस सभा द्वारा 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' की स्थापना की गई। स्वामी जी को इस सभा का अध्यक्ष और महात्मा हंसराज को उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। भारतीय शुद्धि सभा का मुख्य कार्य हिन्दू समाज से बिछुड़े हुए लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में वापस लाना था। विद्यालयों एवं अन्य शैक्षिक संस्थाओं के द्वारा शिक्षा आदि का प्रचार-प्रसार करना, अनाथ बच्चों तथा विधवा महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करना, धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, साहित्य तथा अन्य पुस्तकों एवं ग्रन्थों को छपवाना।

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा सबसे पहले शुद्धि का कार्य आगरा के पास रेमा गांव से मलकाना राजपूतों की शुद्धि के साथ किया गया। मलकाना राजपूत मुख्य रूप से उत्तर भारत में रहने वाला लोगों का एक ऐसा समूह था, जो मूल रूप से क्षत्रिय/राजपूत थे। लेकिन मध्यकाल में उन्होंने इस्लाम धर्म अपना लिया था। हालांकि इस समुदाय ने इस्लाम धर्म अपनाने के बाद भी अपनी पुरानी हिन्दू परम्पराओं को पूरी तरह नहीं छोड़ा था, वे लोग अभी भी अपने नाम के आगे सिंह या ठाकुर लगाते थे और अपनी राजपूत पहचान के साथ जुड़े हुए थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना के बाद इन मलकाना राजपूतों के लगभग 100 गांव का दौरा किया गया और मात्र 2 महीने के अन्दर ही लगभग 5000 मलकानों की शुद्धि की गई। वर्ष 1923 के अन्त तक 30 हजार

मलकानों को वापस हिन्दू धर्म में लाया गया।³ इसी प्रकार से स्वामी जी ने शुद्धि आन्दोलन के स्वरूप को बड़ा किया। स्वामी जी एक दूरदर्शी व्यक्ति थे जिन्होंने राजनीति में संख्या बल के महत्व को पहले ही समझ लिया था, वे ये अच्छे से देख पा रहे थे कि ईसाई मिशनरी और मुस्लिम संगठन हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करा रहे हैं जिस कारण हिन्दू समाज एक तरफा घटता जा रहा है। स्वामी जी की यह सोच थी कि अभी भी अगर हिन्दू धर्म ने अपनी वापसी का रास्ता बन्द रखने की नीति रखी तो वह समय दूर नहीं जब भारत के अन्दर ही हिन्दू समाज की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहचान को खतरा पैदा हो जायेगा। स्वामी जी को इस बात पर पूरा विश्वास था कि भारत की सुरक्षा और अखंडता तभी तक सुरक्षित है, जब तक यहां का मूल समाज बहुसंख्यक और एकजुट है। इसलिए स्वामी जी शुद्धि आंदोलन को देश एकता, अखंडता एवं भविष्य में हो सकने वाले विभाजनों को रोकने का राष्ट्रीय माध्यम मानते थे। स्वामी जी इस बात को जानते थे कि भारत के अधिकांश मुस्लिमों और ईसाइयों ने स्वेच्छा से या किसी धर्म के विचार से प्रभावित होकर धर्म परिवर्तन नहीं किया है। इन लोगों का तलवार के बल पर, अत्याचार के द्वारा, आर्थिक स्थिति के कारण या बोझ से धर्म परिवर्तन किया गया है। इसलिए उन्होंने शुद्धि आन्दोलन के द्वारा शुद्धि को नया धर्म परिवर्तन नहीं माना बल्कि इसको अपने ही बिछड़े हुए भाइयों की घर वापसी और उनके साथ हुआ ऐतिहासिक न्याय माना है।

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा चलाये गये शुद्धि आन्दोलन का अनेक व्यक्तियों, संस्थाओं विशेषकर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने बड़े पैमाने पर विरोध भी किया। उस समय के कुछ राजनीतिक संगठन कांग्रेस ने भी शुद्धि आन्दोलन को अपना समर्थन नहीं दिया। कांग्रेस के अनेक नेताओं ने शुद्धि के कार्य का विरोध किया। शुद्धि आंदोलन के बारे में कांग्रेस के तत्कालीन नेताओं के विचार इस प्रकार थे –

पं. मोतीलाल नेहरू ने कहा कि "शुद्धि आन्दोलन को ऐसे समय पर नहीं चलाना चाहिए जब पंजाब में हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य तनाव है।"

जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि "सभी बाहरी लोगों को मलकाना समुदाय के लोगों को उनके हाल पर छोड़ देना चाहिए और उन्हें स्वयं इस बात पर विचार करने देना चाहिए कि उन्होंने अपना धर्म परिवर्तन करना है कि नहीं।"

इस प्रकार से कांग्रेस के अन्य नेताओं जैसे सी. आर. दास, सरोजनी नायडू, मौलाना अबुल कलाम आजाद आदि ने स्वामी जी पर शुद्धि आन्दोलन की आड़ में लोगों को परेशान करने का आरोप लगाया। लेकिन स्वामी जी ने इन सभी चुनौतियों का सामना किया व ऐसे लोगों एवं संस्थाओं के विचारों का खंडन किया जो स्वामी जी पर इस तरह के आरोप प्रत्यारोप लगा रहे थे।⁴ स्वामी जी ने अपने शुद्धि के कार्य में कांग्रेस के कुछ नेताओं का ही विरोध नहीं झेला, उन्हें महात्मा गांधी जैसे व्यक्तियों के विरोध का भी सामना करना पड़ा। महात्मा गांधी जी ने स्वामी जी के बारे में यंग इंडिया में लिखा कि "स्वामी श्रद्धानन्द जी अब अविश्वास के पात्र बन गये हैं। मैं जानता हूँ कि उनके अधिकतर भाषण भड़काऊ होते हैं क्योंकि वह भी सोचते हैं कि प्रत्येक मुसलमान को आर्य धर्म में दीक्षित किया जा सकता है, यह वैसा ही है जैसे अधिकतर मुसलमान सोचते हैं कि एक न एक दिन हर गैर-मुस्लिम इस्लाम को अपना लेगा। हालांकि स्वामी जी एक निडर और बहादुर आदमी हैं, उन्होंने अकेले ही गंगा के किनारे पर एक गुरुकुल बना दिया है परन्तु वे बहुत जल्दबाज हैं और शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते हैं। उन्हें आर्य समाज से ही यह विरासत में मिला है।"⁵ भारतीय शुद्धि सभा द्वारा शुरू किया गया शुद्धि का यह कार्य अनेक उतार-चढ़ाव देखने के बाद भी अपने लक्ष्य में काफी सफल रहा। शुद्धि आन्दोलन द्वारा अनेक लोगों की हिन्दू धर्म में वापसी हुई और इस आन्दोलन ने भारतीय समाज को धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से बहुत प्रभावित किया।

भारतीय शुद्धि सभा ने भारतीय समाज में धार्मिक चेतना जगाने के साथ-साथ शैक्षिक चेतना भी जगाई, हालाँकि इसकी शुरुआत स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा बहुत पहले 1902 में हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ कर दी गई थी। स्वामी जी आर्य समाज के सदस्य थे, वे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों से बहुत प्रभावित थे इसलिए स्वामी जी ने वैदिक शिक्षा को अपने गुरुकुल का आधार बनाया। स्वामी जी पाश्चात्य शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, वे मातृभाषा (हिन्दी) के पक्षधर थे।⁶ उनका कहना था कि आम जनता को उनकी अपनी भाषा और बोली में ही अच्छे से शिक्षित एवं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया जा सकता है। स्वामी जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी में युवाओं को शिक्षा अपनी मातृभाषा में दी जाती थी और उनमें राष्ट्र प्रेम की भावना सिखाई जाती थी। एक गुप्तचर ने गुरुकुल में दी जाने वाली शिक्षा के बारे में अपनी डायरी में लिखा है कि "गुरुकुल की दीवारों पर इस तरह के चित्र बने हुए हैं, जिनमें अंग्रेजी राज से पहले की भारत की स्थिति और अंग्रेजों के भारत में कोलकाता आने की अवस्था दिखाई गई है। लखनऊ के 1857 के राज-विद्रोह के चित्र भी लगाये गये हैं।

बिजनौर के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट मि. एम. फोर्ड ने जॉन ऑफ आर्क का भी वह बड़ा चित्र गुरुकुल में लगा देखा था जिसमें वह अंग्रेजों के विरुद्ध सेना का संचालन कर रही है।⁷ इस प्रकार से स्वामी जी ने शिक्षा के माध्यम से देश के युवाओं में अपनी मातृभूमि और राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव उजागर किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि आन्दोलन के द्वारा निम्न और सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों को भी शिक्षा से जोड़ने में अपना योगदान दिया। शुद्धि सभा ने शिक्षा को केवल उच्च वर्ग तक सीमित नहीं रखा बल्कि शिक्षा को एक व्यापक समाज तक पहुंचाने का कार्य किया। भारतीय शुद्धि सभा का शिक्षा पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से प्रभाव पड़ा। जो संगठन प्रत्यक्ष रूप से शुद्धि सभा से जुड़े थे उन्होंने शिक्षा-संस्थाओं, मातृभाषा, स्वदेशी आदि गतिविधियों को बढ़ावा दिया। वहीं दूसरी ओर अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा को सामाजिक सुधार, धार्मिक जागरूकता, सामुदायिक साधनों का माध्यम बनाया। जबकि भारतीय शुद्धि सभा का मुख्य कार्य धार्मिक पुनर्गठन था लेकिन आर्य समाज पर इसका गहरा प्रभाव था, जिसने शिक्षा-सुधार के व्यापक कार्यक्रम चलाये थे। इसी प्रभाव के कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी के भारतीय शुद्धि सभा के द्वारा चलाये शुद्धि आन्दोलन में शिक्षा को भी उतना ही महत्व दिया गया जितना अन्य सामाजिक कार्यों को दिया गया था।

भारतीय शुद्धि सभा ने शिक्षा में सुधार, आर्थिक सुधार के साथ अनेक सामाजिक सुधार के कार्य भी किये। उनमें से एक महत्वपूर्ण कार्य दलितोद्धार का था। सभा ने सामाजिक ऊँच-नीच पर प्रहार किया और इसे मानव गरिमा का हनन माना। कुछ पुरानी मान्यताओं के अनुसार शूद्रों और स्त्रियों के वेद पढ़ने पर प्रतिबन्ध था, भारतीय शुद्धि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश के नियमों को लागू करने की घोषणा की कि ईश्वर की वाणी पर सभी का अधिकार समान है। सभा के सदस्य दलित समाज की बस्तियों में जाते थे और वहाँ जाकर सामूहिक वेद-पाठ और गायत्री यज्ञ का आयोजन करते थे जिससे इन वर्गों की सामाजिक स्थिति में सुधार हो सके। भारतीय शुद्धि सभा ने उस समय के संयुक्त प्रांत, पंजाब, बिहार और राजस्थान के अनेकों दलितों की शुद्धि करके उन्हें यज्ञोपवीत धारण कराया।

सभा ने गुरुकुलों में भी ऐसे वर्गों के बच्चों का प्रवेश कराया जो सामाजिक रूप से पिछड़ चुके थे, इन बच्चों को संस्कृत, वेद, शास्त्र और कर्मकांड आदि का अध्ययन कराया गया और उनको शास्त्री एवं पंडित जैसी उपाधियाँ दी गईं। जब वे विद्यार्थी पुरोहित बनकर सवर्णों के घर जाकर वैवाहिक संस्कार और अनुष्ठान के कार्यों को पूरा करते थे तो इससे प्राचीन समय से चली आ रही जातिगत श्रेष्ठता के भाव पर आघात होता था।⁸ भारतीय शुद्धि सभा के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जाति प्रथा के कट्टर आलोचक थे, उनका इस पर विचार था कि जब एक जाति या उपजाति का विघटन होना प्रारम्भ हो जाता है तो उसको रोकना बहुत मुश्किल होता है क्योंकि प्रत्येक

श्रेणी या उपजाति दूसरों को तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगता है और उन लोगों से नफरत करने लगती है जो अपने आप को उच्च जाति का बताते हैं। स्वामी जी का मानना था कि महाभारत काल तक वेदों और शास्त्रों में कहीं भी पंचम वर्ग के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती है लेकिन बाद में अछूतों और दलितों को पंचम नाम देकर पुकारा जाने लगा। यह भारतीय हिन्दू समाज पर एक ऐसा अत्याचार था जिसने देश की एक तिहाई जनसंख्या को पंचम वर्ग में बाँट दिया। इन पंचम वर्ग के लोगों को ही अन्य धर्मों के लोगों ने अधिकतर अपने धर्म में परिवर्तित किया जिसमें ज्यादातर ईसाई मिशनरियों का शिकार हुए हैं।⁹ इस तरह से भारतीय शुद्धि सभा ने दलितों के उद्धार के लिये भी अनेक कार्य किये और उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए उनमें धार्मिक चेतना जगाकर, सामाजिक संगठन बनाकर उन्हें जागरूक किया। बीसवीं शताब्दी में जब देश अंग्रेजी शासन की शोषणकारी नीतियों से परेशान था, ऐसे समय में भारतीय शुद्धि सभा द्वारा देश, धर्म और समाज के लिये किये गये कार्य बहुत ही सराहनीय थे।

भारतीय शुद्धि सभा के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द ने बाल विवाह (रोकने), विधवा विवाह एवं नारी शिक्षा आदि का समर्थन किया। सभा ने सामाजिक संगठनों के सहयोग से भी बाल विवाह एवं विधवा विवाह के प्रति लोगों को जागरूक किया। सभा के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द का मानना था कि स्त्री की विवाह की उम्र (कन्या व पुरुष की 25 वर्ष) होनी चाहिए। स्वामी जी मनु महाराज के इस विचार से सहमत थे कि –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥¹⁰

अर्थात्, जिस समाज में नारियों का आदर सत्कार किया जाता है वहाँ देवताओं का निवास होता है (वहाँ सत्य, पवित्रता, सुख, शान्ति और सम्पदा का निवास होता है) परन्तु जहाँ उनका निरादर होता है वहाँ सम्पूर्ण क्रियाएं असफल होती हैं।

निष्कर्ष

भारतीय शुद्धि सभा का आन्दोलन केवल धार्मिक चेतना तक सीमित नहीं था बल्कि यह बीसवीं शताब्दी के भारत में सामाजिक, धार्मिक पुनर्जागरण की क्रान्तिकारी घटना थी। सभा ने ब्रिटिश शासन के समय और मध्यकालीन रूढ़िवादिता के बीच पिस रहे भारतीय समाज को एक नया दिशा-निर्देश दिया। अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव का शिकार हुए वर्गों को वेदों का अध्ययन, जनेऊ धारण करने और धार्मिक समानता का अधिकार देकर भारतीय शुद्धि सभा ने छुआछूत के विरुद्ध नई चेतना और सामाजिक न्याय की मजबूत नींव तैयार की। सभा ने इसके साथ-साथ बाल विवाह पर प्रतिबन्ध, विधवाओं के पुनर्विवाह और महिला शिक्षा के प्रचार आदि कार्यों से महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश शासन के समय जब भारतीय समाज का शोषण हो रहा था, वेदों की ओर लोटों का नारा और मलकाना राजपूतों की घर वापसी जैसी घटनाओं ने भारतीय समाज को एकजुट किया और उनमें स्वाभिमान की भावना जगाई। समग्र रूप से कहें तो भारतीय शुद्धि सभा ने भारतीय समाज को अंधविश्वासों से निकालकर समानता, तार्किकता और आधुनिकता की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सन्दर्भ सूची

1. कोहली, हरबंसलाल, शुद्धि आन्दोलन, दिल्ली, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 2007, पृ० 29
2. भास्कर, डॉ० सुभाष, हिन्दी पत्रकारिता और स्वामी श्रद्धानन्द, दिल्ली, सरस्वती साहित्य संस्था, 2007, पृ० 160
3. आर्य, डॉ० विवेक, आर्य समाज और शुद्धि आन्दोलन, दिल्ली, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 2023, पृ० 22
4. वही, पृ० 23
5. वही, पृ० 30
6. प्रभाकर, विष्णु एवं राकेश, विष्णुदत्त, भारतीय साहित्य के निर्माता स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, नई दिल्ली साहित्य अकादमी, 1993 पृ० 26
7. विद्यालंकार, श्री सत्यदेव, स्वामी श्रद्धानन्द, दिल्ली, विजय पुस्तक भण्डार, 1933, पृ० 345
8. स्वामी, श्रद्धानन्द, हिन्दू संगठन, दिल्ली, विजय पुस्तक भण्डार, 1926, पृ० 67
9. वही, पृ० 68
10. वही, पृ० 76